स्थापना
अधिवेशन 4

जीवन परिवर्तन को समझना

जीवन परिवर्तन को समझना

. आज का उद्धेश्य परमेश्वर की महान योजना और प्रयोजन को समझना है।

कई बार आप लोगो को यह कहते हुए सुनते होंगे.....मैंने **उद्धार पाया** था। उनके कहने का वास्तविक अर्थ यह होता है कि उन्होंने अपना जीवन यीशु को दिया था और एक बार नया जन्म पाया था या कुछ लोग कहते हैं कि 11 साल की आयु में उनका जीवन परिवर्तित हुआ था वास्तव में वे ये कह रहे हैं कि उनका 11 साल की आयु में नया जन्म हुआ था..... उस समय उन्होंने यीशु को अपना दिल दिया था।

आओ हम इन तीन शब्दों के अर्थों को जान लें जिनसे हम सभी परिचित हैं परन्तु हम सभी इनका प्रयोग करते समय उलझन में पड़ जाते हैं।

1. नया जन्म
2. उद्धार या ''बचे हुए होना''
3. जीवन परिवर्तन या मन फिराव

नया जन्म

परमेश्वर के राज्य में आने के लिए हमें आत्मिक रूप से परिवार में जन्म लेना जरूरी है।

यीशु ने कहा,'' जो शरीर से जन्मा है वह शरीर है जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है।

प्राकृतिक जन्म हमें मानवीय जीवन के लिए तैयार करता है, परन्तु आत्मिक जीवन का होना — हमें परमेश्वर के साथ स्वर्ग में रहने के योग्य बनाता है — आत्मिक जन्म का होना अवश्य है।

- एक बार हम खोए हुए थे, पर अब हमें ढुंढ लिया गया है
- एक बार हम बिना जीवन के थे, पर अब हमारे पास जीवन है
- एक बार हम अनन्त से अलग थे, पर अब अनन्त जीवन में हैं।
- एक बार हम दूर थे, पर अब हमें ग्रहण कर लिया गया है

नया जन्म होना जरूरी है, परन्तु नया जन्म मात्र एक **प्रारम्भ** है

हमारे बच्चे, जब उनका जन्म होता है, ये आनन्द से भरी हुई गठरी के समान है हम उन्हे प्रेम से उठाते है, उन्हे हिलाते हैं, और उन्हे अपनी छाती पर सुला देते हैं। पर यदि 4 साल की आयु में भी वे अभी भी आनन्द की गठरी बनें हुए हैं और उन्हीं बातों को कर रहें हैं, तब वे अब दुःख की गठरी होंगे — यदि वे शरीर मं नहीं बढ़े हैं, उन्होंने चलना फिरना नहीं सीखा है और वे बढ़ नहीं रहें हैं। इसलिए नये जन्म के साथ.... प्रारम्भ हेाता है।

जीवन परिवर्तन को समझना

. **''आत्मिक जन्म'' के साथ, परिवर्तन की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है**

ये अध्ययन महत्वपूर्ण है कि हम समझ लें कि ''नए जन्में'' ''बचाए गए'' और ''परिवर्तित हो गए'' में क्या भिन्नता है।

नया जन्म है : **प्रारम्भ** .....है

परमेश्वर का अनन्त जीवन का वरदान – आत्मिक '' नए जन्में,'' के द्वारा होता है, जैसे पवित्र आत्मा हमारे अन्दर वास करता है, जब हम यीशु को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु ग्रहण कर लेते है।

उद्धार है : **अन्तिम परिणाम** .....है

अपने पूरे जीवन का पुनः दावा करना और इसकी पापमय दशा से पूरी तौर पर परमेश्वर के उद्धेश्य के लिए और उसके राज्य के लिए अभी और हमेशा के लिए अलग हो जाना।

– हम बचाए ''हुए'' हैं

– *''क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है और उद्धार के लिए मुंह से अगीकार किया जाता है।''*– रोमियों 10:10

– हम बचाए ''जा रहे'' हैं

– *''..... डरते और कांपते हुए अपने–अपने उद्धार का काम पूरा करते जाओ!* – फिलिप्पीयों 2:12

– हम ''बचाए'' जाऐंगे

– *.....'' जो लोग बाट जोहते हैं उनके उद्धार के लिए दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा''*– इब्रानियों 9:28

''अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो'' – 1पतरस 1:9

बदलाव है : **प्रकिया** .....है

प्रकिया जो नए जन्म में प्रारम्भ हुई और पूरे जीवन चलती रहती है जब तक ये यीशु मसीह के प्रेमी प्रभुत्व के आधीन नहीं आ जाती।

उद्धार **अन्तिम परिणाम** है।

उद्धार के लिये युनानी का भाषा का शब्द ''सतोरिया'' है इसका अर्थ है सम्पूर्णता, पूर्णता, पूरा स्वस्थ... परमेश्वर की सभी योजनाओं का पूरा होना।

यदि ऐसी बात है तो, हमें ऐसी बात पर हैरानी नहीं होनी चाहिए जब बाइबल उद्धार के बारे में ये कहती है कि यह एक घटी हुई घटना है, वर्तमान और भविष्य का एक अनुभव है।

भूतकाल...''हम बचाए गए थे''

जब कभी हम उद्धार के लिए पश्चाताप करते हैं और यीशु को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता करके भरोसा करते है हम उद्धार के हकदार हो जाते हैं।

वर्तमान...''हम बचाए जा रहे हैं''

फिलिपीयों के नाम अपने पत्र में पौलुस डरतें ओर कांपते हुए उद्धार के काम को पूरा करने की बात कहता है। इस तरह उद्धार का वर्तमान का भाव प्रकट होता है जो हमें परमेश्वर की सामर्थ का पाप के बन्धन से छुटकारा दिलाने को अनुभव कराता है।

भविष्य...''हम बचाए जाऐंगे''

पतरस ने ये कहते हुए लिखा कि, ''अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो।'' इस तरह भविष्य में विश्वासीयों के छुटकारे की बात की गई है। इब्रनियों के पत्र में भी यही कहा गया है कि वह दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा पर उन लोंगों के लिए उद्धार लेकर आएगा जो उसकी बाट जो रहे है।

इसलिए यह काम जो हमारे जीवन में भूतकाल, वर्तमान, ओर भविष्य का आयाम रखता है, उद्धार के नाम से जाना जाता है, तब उद्धार एक घटना नहीं है। नया जन्म एक घटना है। परन्तु उद्धार पूर्ण रूप से परेश्वर का काम है, उसकी पूर्ण योजना हमारे जीवन में पूरी होती है।

जीवन परिवर्तन, मन फिराव यानि बदलाव एक **प्रक्रिया** है अर्थात ''उद्धार के काम को पूरा करते जाना'' है, जो नए जन्म के समय आरम्भ होता है और जब तक हमारे जीवन यीशु की प्रभुता में नहीं आ जाता तब तक चलता रहता है।

हमारा आज का उद्धेश्य जीवन परिवर्तन यानि मन फिराव की प्रक्रिया का विशलेषण करना है।

जीवन परिवर्तन को समझना

. ''आत्मिक जन्म'' के साथ, परिवर्तन की प्रकिया प्रारम्भ होती है

ये अध्ययन महत्वपूर्ण है कि हम समझ लें कि ''नए जन्में'' ''बचाए गए'' और ''परिवर्तित हो गए'' में क्या भिन्नता है।

नया जन्म है : **प्रारम्भ** .....है

परमेश्वर का अनन्त जीवन का वरदान – आत्मिक '' नए जन्में,'' के द्वारा होता है, जैसे पवित्र आत्मा हमारे अन्दर वास करता है, जब हम यीशु को अपना उद्धारकर्ता और प्रभु ग्रहण कर लेते है।

उद्धार है : **अन्तिम परिणाम** .....है

अपने पूरे जीवन का पुनः दावा करना और इसकी पापमय दशा से पूरी तौर पर परमेश्वर के उद्धेश्य के लिए और उसके राज्य के लिए अभी और हमेशा के लिए अलग हो जाना।

– हम बचाए ''हुए'' हैं

– *''क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है और उद्धार के लिए मुंह से अगीकार किया जाता है।''*– रोमियों 10:10

– हम बचाए ''जा रहे'' हैं

– *''..... डरते और कांपते हुए अपने–अपने उद्धार का काम पूरा करते जाओ!* – फिलिप्पीयों 2:12

– हम ''बचाए'' जाऐंगे

– *.....'' जो लोग बाट जोहते हैं उनके उद्धार के लिए दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा''*– इब्रानियों 9:28

''अपने विश्वास का प्रतिफल अर्थात आत्माओं का उद्धार प्राप्त करते हो'' – 1पतरस 1:9

बदलाव है : **प्रकिया** .....है

प्रकिया जो नए जन्म में प्रारम्भ हुई और पूरे जीवन चलती रहती है जब तक ये यीशु मसीह के प्रेमी प्रभुत्व के आधीन नहीं आ जाती।

पश्चाताप जीवन परिवर्तन की प्रक्रिया में एक जटिलता है। शायद पश्चाताप की सबसे स्पष्ट कहानी उड़ाऊ पुत्र की है। हम इस कहानी का कुछ हिस्सा जो हमारी प्रशिक्षण पुस्तिका में लिखा है, को पढ़ेंगे।

पढ़िए लूका 15:17—24

अब यहां पर एक नौजवान जो अपने आपे में आ गया कि उसने अपने जीवन में एक गलत रास्ता चुना था, और वह एक ऐसे स्थान पर पहुच गया जहां वह नहीं पहुंचना चाहता था। वो वहां बैठा रह सकता था और बाकी बचे जीवन में शोक मना सकता था परन्तु उसने अपने आप से कहा कि मैं कुछ करने जा रहा हुं।''मैं उठकर अपने पिता के पास वापस चला जाऊंगा और मैं कहुंगा कि मुझसे गलती हो गई। कृप्या मुझे कम से कम अपना एक नौकर ही बना लें।''

अब यह सच्चा पश्चाताप है वह अपने आपे में आ गया कि जो कुछ वह कर रहा था वह गलत है और तब उसने अपनी इस समझ पर कार्यवाही की। उसने अपने अहम को नम्र किया, अपने पिता के पास वापस चला गया और कहने लगा कि वह किसी भी चीज़ के लायक नही है। ये हमारे अहम का अन्त है और वापस मुड़ना है और प्रभु के पास नम्र आत्मा के साथ पहुंच जाना है।

यह कहानी यह भी दिखलाती है कि जब हम पश्चाताप करते हैं तब परमेश्वर कैसा व्यवहार करता है। उसके पश्चाताप ने उसके पिता के पास पहुंचने का रास्ता खोल दिया। उसका पिता इस बात की इन्तजार कर रहा था कि एक दिन वह वापस आएगा। जैसे ही उसने पश्चाताप किया और वापस चला गया उसके पिता ने उसे फिर से स्थापित कर दिया। इसी तरह से जैसे उड़ाऊ पुत्र के जीवन में हुआ हमारे जीवन में भी पशचाताप एक **प्रारम्भिक द्वार** है जो हमें परमेश्वर तक पहुचने के सारे रास्ते खोल देता है।

आपने चित्रकार हंट के द्वारा चित्रित किए गए उस चित्र को देखा होगा जिसमें यीशु दरवाजे के बाहर हाथ में लालटेन लिए दरवाजा खटखटा रहा है

- उस चित्र में दरवाजे के बाहर कुंडी नहीं लगी हुई।

- यीशु खटखटा तो रहा है परन्तु यदि वह अन्दर आना चाहता है तो किसी को अन्दर से कुंडी खोलनी पड़ेगी।

- यह चित्र प्र.वाक्य 3:20 को चित्रित कर रहा है,'' देख मैं द्वार पर खड़ा खटखटाता हूं; यदि कोई मेरा शब्द सुनकर द्वार खोलेगा, तो मैं उसके पास भीतर आकर उसके साथ भोजन करूंगा, और वह मेरे साथ।''

हमारे जीवन के हर क्षेत्र में पश्चाताप प्रारम्भिक द्वार है।

. बदलाव की प्रक्रिया में पश्चाताप अति आवश्यक है

उदाहरण : उडाऊ पुत्र

''जब वह अपने आपे में आया तब कहने लगा कि मेरे पिता के कितने ही मज़दूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखों मर रहा हूं, मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उससे कहूंगा कि पिता जी मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी नजर में पाप किया है, अब इस योग्य नही रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं मुझे अपने मज़दूर की नाई रख ले, तब वह उठकर अपने पिता के पास चला, वह अभी दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया और दौड़कर उसे गले लगाया और बहुत चूमा। पुत्र ने उससे कहा, पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी नजर में पाप किया है, अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, परन्तु पिता ने अपने दासों से कहा, झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहनाओ और उसके हाथ में अंगुठी और पावों में जूतियां पहनाओ, और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खाएं और आनन्द मनाएं, क्योंकि मेरा ये पुत्र मर गया था फिर जी गया हैं, खो गया था अब मिल गया है और वे आनन्द करने लगे'– लूका 15:17–24

1. पश्चाताप हमारे जीवन के हर क्षेत्र में .....**द्वार**..... है।

प्रकाशित वाक्य 3:20

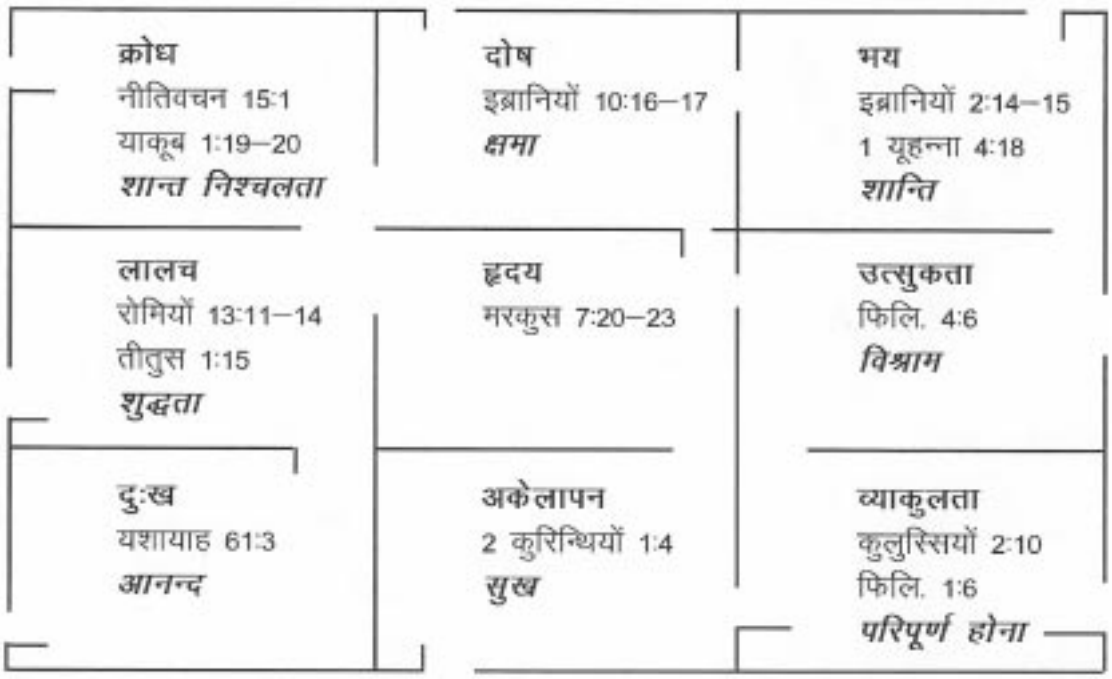

यीशु हमारे हृदय मे जिस भी द्वार से हम उसे निमत्रंण देते हैं, आता है ताकि वह हमें प्रयोग करे। एक बार प्रवेश होकर वह सभी कमरों मे जाना चाहता है।

आपकी प्रशिक्षण पुस्तिका में बनाया गया आरेख एक मकान के कई कमरों को दिखलाता है। मकान हमारे जीवन को प्रस्तुत करता है। आप देखें इस मकान का केन्द्र हृदय है। यीशु ने कहा कि यदि वह खटखटाता है और वह आएगा और हमारे साथ भोजन (संगति) करेगा। एक होटल से यदि हमें कुछ खाना होता है तो हम फोन करके बोल देते हैं और कोई आकर भोजन दे जाता है। भोजन देने वाला व्यक्ति दरवाजे को खटखटाता हैं और हम दरवाजा खोलते हैं और वह अन्दर आता है। वह दरवाजा तोड़कर अन्दर नहीं आता हैं।

इसी तरह से यीशु के साथ भी होता है। यीशु खुले हुए दरवाजे में से प्रवेश करते हैं। ये या तो क्षमा के द्वारा हो सकता है या चंगाई या किसी लत से छुटकारा या अकेलेपन से या टुटे हुए विवाह से या दिल के टुटने से या दुर्घटना से या फिर डर से।

एक पास्टर हस्पताल में मरीजों को मिलने गया था। एक स्त्री ने उससे कहा कि कल उसकी सर्जरी होने वाली है। वह न ता डाक्टर था ना ही नर्स। वह स्त्री क्यों उससे सर्जरी की बात कर रही थी? क्योंकि वह डरी हुई थी पास्टर समझदार था और वह समझ गया कि अब उसे एक फैंसला लेने की जरूरत है। क्या यीशु इस स्त्री के दिल में डर के माध्यम से अन्दर आ सकता है या फिर उसे उस स्त्री के दोष के द्वार में से जाना होगा? जब वह स्त्री इस सर्जरी के डर से भरी हुई थी? तो क्या वह उस स्त्री को समझा पाएगा कि वह एक दोषित पापी थी और उसे अपने पापों से पश्चाताप करने की जरूरत थी? या फिर उसकी परिस्थितियों में यीशु डर के द्वार से प्रवेश करेगा? और पास्टर ने ऐसा ही महसुस किया और पास्टर ने उस स्त्री से कहा, ''मैं यीशु से कहुंगा कि वह आप्रेशन वाले कमरे में आपके साथ जाए।'' उसने उस स्त्री के साथ प्रार्थना की। आप यीशु के प्रभाव को उसके जीवन में देख सकते हैं।

प्रभु यीशु जिस भी द्वार को हमारे जीवन में आने के लिए प्रयोग करें। वह तुरन्त हमारे दिल में आ जाते हैं।

. बदलाव की प्रकिया में पश्चाताप अति आवश्यक है

उदाहरण : उडाऊ पुत्र

''जब वह अपने आपे में आया तब कहने लगा कि मेरे पिता के कितने ही मज़दूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखों मर रहा हूं, मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उससे कहूंगा कि पिता जी मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी नजर में पाप किया है, अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं मुझे अपने मज़दूर की नाई रख ले, तब वह उठकर अपने पिता के पास चला, वह अभी दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया और दौड़कर उसे गले लगाया और बहुत चूमा। पुत्र ने उससे कहा, पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी नजर में पाप किया है, अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, परन्तु पिता ने अपने दासो से कहा, झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहनाओ और उसके हाथ में अंगुठी और पावों में जूतियां पहनाओ, और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खांए और आनन्द मनांए, क्योंकि मेरा ये पुत्र मर गया था फिर जी गया हैं, खो गया था अब मिल गया है और वे आनन्द करने लगे''– लूका 15:17–24

1. पश्चाताप हमारे जीवन के हर क्षेत्र में ..... **द्वार** ..... है।

प्रकाशित वाक्य 3:20

क्रोध नीतिवचन 15:1 याकूब 1:19–20 ***शान्त निश्चलता***	**दोष** इब्रानियों 10:16–17 ***क्षमा***	**भय** इब्रानियों 2:14–15 1 यूहन्ना 4:18 ***शान्ति***
लालच रोमियों 13:11–14 तीतुस 1:15 ***शुद्धता***	**हृदय** मरकुस 7:20–23	**उत्सुकता** फिलि. 4:6 ***विश्राम***
दुःख यशायाह 61:3 ***आनन्द***	**अकेलापन** 2 कुरिन्थियों 1:4 ***सुख***	**व्याकुलता** कुलुस्सियों 2:10 फिलि. 1:6 ***परिपूर्ण होना***

यीशु हमारे हृदय मे जिस भी द्वार से हम उसे निमत्रंण देते हैं, आता है ताकि वह हमें प्रयोग करे। एक बार प्रवेश होकर वह सभी कमरों मे जाना चाहता है।

अब आप उस आरेख में देख सके हैं कि द्वार न केवल बाहर दिए गए हैं परन्तु कमरों के अन्दर भी दिए गए हैं।

- इसलिए जब यीशु हमारे दिल में आता है तो वह हमारे जीवन के हर कमरे में प्रवेश चाहता है।

- जब हम अपने अलग–2 कमरों को खोलते चले जाते हैं वह उनमें प्रवेश करता चला जाता है और अपनी उपस्थिति से उन्हे भर देता हैं।

- यीशु मसीह एक के बाद दूसरे कमरे में जाना चाहते हैं जैसे–2 हम उनके दरवाजों को खोलते चले जाते हैं।

यदि हम किसी द्वार को यीशु से बन्द रखें और उससे ये कहें, ''इसे मैं स्वंय ही सम्भाल लूंगा, यीशु।'' या, ''मैं नहीं चाहता कि आप इस कमरे में कोई बदलाव करें।'' वह इसके लिए आप पर दबाव नहीं डालेगा।

- यदि हमारे पास एक पश्चाताप की आत्मा नहीं है जो यह कहता हो, ''मैं अपने रास्तों से मुड़ूंगा कुप्या अन्दर आंए और इस समस्या में मेरी मदद करें।'' यीशु दूसरे कमरों में प्रवेश नही कर पाएगा।

- जीवन परिवर्तन जब ही जीवन के हर क्षेत्र में बढ़ेगा जब हम ये कहेंगे, ''यीशु अन्दर आइए! इस कमरे को अपने अधिकार में लेकर अपनी उपस्थिति से भर दें''।

इसलिए प्रभु यीशु मसीह तब तक संतुष्ट नहीं होता जब तक विश्वासी अपने जीवन का हर क्षेत्र उसके लिए न खोल दे, जब तक वह सब कुछ न बदल दें....

- हमारे क्रोध को शान्त निश्चलता में
- हमारे दोष को क्षमा में
- हमारे भय को आराम में
- हमारी व्याकुलता को परिपूर्णता में
- हमारे अकेलपन को सांत्वना में
- हमारें दुख को आनन्द में
- हमारी अभिलाषा को शुद्धता में

पश्चाताप यीशु को हमारे जीवन के हर क्षेत्र और हिस्से में प्रवेश करने का निवेदन करता है।

. बदलाव की प्रकिया में पश्चाताप अति आवश्यक है

उदाहरण : उडाऊ पुत्र

''जब वह अपने आपे में आया तब कहने लगा कि मेरे पिता के कितने ही मज़दूरों को भोजन से अधिक रोटी मिलती है, और मैं यहां भूखों मर रहा हूं, मैं अब उठकर अपने पिता के पास जाऊंगा और उससे कहूंगा कि पिता जी मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी नजर में पाप किया है, अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं मुझे अपने मज़दूर की नाई रख ले, तब वह उठकर अपने पिता के पास चला, वह अभी दूर ही था कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया और दौड़कर उसे गले लगाया और बहुत चूमा। पुत्र ने उससे कहा, पिता जी, मैंने स्वर्ग के विरोध में और तेरी नजर में पाप किया है, अब इस योग्य नहीं रहा कि तेरा पुत्र कहलाऊं, परन्तु पिता ने अपने दासो से कहा, झट अच्छे से अच्छा वस्त्र निकालकर उसे पहनाओ और उसके हाथ में अंगुठी और पावों में जूतियां पहनाओ, और पला हुआ बछड़ा लाकर मारो ताकि हम खांए और आनन्द मनांए, क्योंकि मेरा ये पुत्र मर गया था फिर जी गया हैं, खो गया था अब मिल गया है और वे आनन्द करने लगे'– लूका 15:17–24

1. पश्चाताप हमारे जीवन के हर क्षेत्र में .....**द्वार**..... है।

प्रकाशित वाक्य 3:20

क्रोध नीतिवचन 15:1 याकूब 1:19–20 ***शान्त निश्चलता***	**दोष** इब्रानियों 10:16–17 ***क्षमा***	**भय** इब्रानियों 2:14–15 1 यूहन्ना 4:18 ***शान्ति***
लालच रोमियों 13:11–14 तीतुस 1:15 ***शुद्धता***	**हृदय** मरकुस 7:20–23	**उत्सुकता** फिलि. 4:6 ***विश्राम***
दुःख यशायाह 61:3 ***आनन्द***	**अकेलापन** 2 कुरिन्थियों 1:4 ***सुख***	**व्याकुलता** कुलुस्सियों 2:10 फिलि. 1:6 ***परिपूर्ण होना***

यीशु हमारे हृदय मे जिस भी द्वार से हम उसे निमत्रंण देते हैं, आता है ताकि वह हमें प्रयोग करे। एक बार प्रवेश होकर वह सभी कमरों मे जाना चाहता है।

पश्चाताप को हमारे **<u>अस्तित्व के केन्द्र</u>** में पहुंचना चाहिए जो हृदय का सबसे गहरा हिस्सा होता है।

प्रेरित 3:19 कहता है कि ''अपने दिमाग को बदलो और अपने दिल को बदलो।''

आओं हम इस बारे में कुछ उदाहरणों को देखें

- एक छोटा लड़का है वह अपने हाथ को चाकलेट से भरे डब्बे में डालता है वह जानता है कि उसे बिना अनुमति के डब्बे में हाथ नहीं डालना चाहिए। उसकी मां उसे पकड़ लेती है। उसे बहुत दुख है। वह न केवल दुखी हैं परन्तु उसे कोई चाकलेट भी नहीं मिली क्योंकि उसकी मां ने उसके हाथ पर मारा। पर यदि उसका दुख चला जाता है तो अनुमान लगाओ कि उसका हाथ फिर कहां जाएगा। जब उसकी मां उसे देख नहीं रही होगी... वापस चाकलेट के डब्बे में। जब तक वह अपने अन्दर सहमति नहीं बनाता कि, ''मुझे बिना किसी अनुमति के चाकलेट नहीं खानी चाहिए।

- एक छोटी लड़की बस में सफर कर रही थी खड़ी हो जाती है और सभी पर मुस्कुराती है। उसकी मां उसे बैठने को कहती है। वह फिर खड़ी हो जाती है। ऐसा कई बार होता है। आखिर में उसकी मां उसका हाथ पकड़कर जबरदस्ती से नीचे बिठाती है। और तब छोटी लड़की यह कहती है कि, ''मैं नीचे बैठ रही हूं, पर अपने अन्दर में खड़ी हूं।'' इसका सीधा सा अर्थ है कि जैसे ही उसकी मां अपने हाथ को उस पर से हटा लेगी वह तुरन्त उठ खड़ी होगी। क्यों? क्योंकि उसके दिल में कोई पश्चाताप नहीं है । बाहरी परिस्थितियां उसे नीचे बैठने को मजबूर कर रही हैं पर आन्तिरिक रूप से वह अपनी मर्जी पूरा करना चाहती है।

- हम प्रौढ़ भी इसी तरह का अनुभव करते हैं। उस व्यक्ति के साथ यह सच है जिसके जीवन में हिसांत्मक गुस्सा हो, शारिरीक अभिलाषा हो, या फिर और कोई समस्या जो इस आरेख में दी गई है।

यह केवल तभी सम्भव है जब हम यीशु को हमारे जीवन के हर क्षेत्र के कमरे में निमंत्रण दें और कहें, ''यीशु कृप्या मेरी मदद करें कृप्या मुझे बदल दें।'' वह हमारे जीवन के स्वभाव को ही बदल सकता है। जब तक ऐसा नहीं होता तब तक स्थाई परिवर्तन नहीं होता।

2. पश्चाताप को हमारे .....**अस्तित्व के केन्द्र**..... में पहुंचना चाहिए

यह हमारे कामों के द्वारा और अधिक गहरा जाना चाहिए – प्रेरितों 3:19

3. पश्चाताप को हमारे हृदय का .....**नियमित व्यवहार**.....बन जाना चाहिए।

एक कोमल और पश्चातापी हृदय ही कूंजी है

''टुटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है, हे परमेश्वर, तू टुटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता'' – भजन संहिता 51:17

. **आधूरा हृदय परिवर्तन कभी भी परमेश्वर का इरादा नहीं हैं**

उदाहरण : छः साल का लड़का

एक परिवर्तित विश्वासी लगतार अपना सब कुछ मसीह को देता चला जाता है जितना अधिक वह उसे जानता चला जाता है।

उदाहरण : पतरस – छः अवस्थांऐ

इस प्रकार बहुत से विश्वासीयो के लिए बदलाव की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती है।

''अधिकतर बदले गए''
''लगभग बदल गए''

यीशु खटखटाता रहेगा और हृदय परिवर्तन करता रहेगा जब तक कि हमारा पूरा जीवन उसकी प्रेमी प्रभुता के आधीन ना हो जाए और परमेश्वर के अभिप्रायो मे न बहे।

समापन :

हमारी जीवन शक्ति .....की गवाही.....हमारे परिवर्तन की प्रगति पर निर्भर है।

– ये हमारे अनुभव से सीधे सम्बन्धित है।

– ये ''यीशु के साथ'' कभी न अन्त वाला रोंमांच बन जाता है।

पशचाताप को हमारे हृदय का **<u>नियमित व्यवहार</u>** होना चाहिए।

> ''टुटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; तू टुटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता।''

जब हमारा ह्रदय प्रभु के प्रति कोमल और नम्र होता है, और यह हमारे रोजाना का जीवन होता है तब हमारा पश्चाताप नियमित रूप से जीवन परिवर्तन के द्वार को जीवन में आगे बढ़ने के लिए खोलता चला जाएगा।

कुछ लोग ऐसा विश्वास करते है कि पश्चाताप तभी प्रगट होता है जब हमने नया जन्म पाया हो या फिर किसी जागृति सभाओं के दौरान।

- परन्तु पश्चाताप हमारे प्रतिदिन का आत्मा होना चाहिए।

- इसलिए यदि आप किसी तरह से परमेश्वर की इच्छा से बाहर हो रहे हैं, आप तुरन्त जान जाऐंगे और आप परमेश्वर से मदद मांग सकते हैं।

- हम पश्चाताप करते है। हम अपने आप को प्रथम स्थान से हटा देते हैं। ''प्रभु मैं आपके रास्ते पर चलना चाहता हूं।''

पश्चाताप और अधिक बढ़ता चला जाता है जब हम नई परिस्थितियां या हमारे जीवन के नए क्षेत्र में होते हैं।

- यह केवल एक बार नहीं होता, दो बार नहीं होता, या फिर कई बार नहीं होता <u>परन्तु पश्चाताप में जीवन जीने की इच्छा होती है</u>।

- जब हमारे पास पश्चातापी ह्रदय होता है तब परमेश्वर अपने सभी अच्छे कामों को जिन्हे वह हमारे जीवन में करना चाहता हैं करता है।

- पर जैसे ही हमारा आत्मा परमेश्वर के लिए द्वार को बन्द कर देता है यह उसी समय बन्द हो जाता है।

- परमेश्वर हमारे लिए क्या करना चाहता है, और किस तरह के परिवर्तन लाना चाहता है और जीवन परिवर्तन की प्रक्रिया को वह कैसे हमारे जीवन में आगे बढ़ाना चाहता है सब कुछ यहां पर रूक जाएगा। जब तक हमारा ह्रदय पश्चातापी नहीं है। हमें पश्चातापी ह्रदय की जरूरत है।

2. पश्चाताप को हमारे .....**अस्तित्व के केन्द्र**..... में पहुंचना चाहिए

यह हमारे कामों के द्वारा और अधिक गहरा जाना चाहिए – प्रेरितों 3:19

3. पश्चाताप को हमारे हृदय का .....**नियमित व्यवहार**.....बन जाना चाहिए।

एक कोमल और पश्चातापी हृदय ही कूंजी है

''टुटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है, हे परमेश्वर, तू टुटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता'' – भजन संहिता 51:17

. **आधूरा हृदय परिवर्तन कभी भी परमेश्वर का इरादा नहीं हैं**

उदाहरण : छः साल का लड़का

एक परिवर्तित विश्वासी लगतार अपना सब कुछ मसीह को देता चला जाता है जितना अधिक वह उसे जानता चला जाता है।

उदाहरण : पतरस – छः अवस्थांऐ

इस प्रकार बहुत से विश्वासीयो के लिए बदलाव की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती है।

''अधिकतर बदले गए''
''लगभग बदल गए''

यीशु खटखटाता रहेगा और हृदय परिवर्तन करता रहेगा जब तक कि हमारा पूरा जीवन उसकी प्रेमी प्रभुता के आधीन ना हो जाए और परमेश्वर के अभिप्रायो मे न बहे।

समापन :

हमारी जीवन शक्ति .....की गवाही.....हमारे परिवर्तन की प्रगति पर निर्भर है।

– ये हमारे अनुभव से सीधे सम्बन्धित है।

– ये ''यीशु के साथ'' कभी न अन्त वाला रोंमांच बन जाता है।

अधूरा हृदय परिवर्तन कभी भी परमेश्वर का इरादा नहीं है।

हमारे जीवन परिवर्तन को लगातार परिपक्व होना है।

6 साल के एक बच्चे का पश्चाताप 12 साल के लड़के जैसा नहीं होता। एक 12 साल का लड़का अधिक जानता है और 6 साल के बच्चे के मुकाबले अधिक निर्णय ले सकता है। परन्तु 12 साल के लड़के और 18 साल के युवक में और भी बड़ी भिन्नता है वे दोनों मुश्किल से एक समान जगह पर नहीं रह सकते। वे बहुत कुछ जानते हैं। वे बहुत सारी भिन्न चीज़ों को अनुभव करते हैं।

अब होता क्या है... बहुत से लोग जो यीशु को ग्रहण करते हैं वे 6 से 12 साल की आयु के बीच होते हैं। ये कथन नए आदिवासीयों या अविश्वासीयों के क्षेत्रों में सही साबित न होगा। ये बड़ी अद्‌भुत बात है जब एक बच्चा प्रभु को ग्रहण करता है। परन्तु अक्सर उनका ये प्रभु में हुआ अनुभव उनके शारिरीक विकास के साथ–2 नहीं बढ़ता है।

जो नई बातें उसने अपने लिए सीखीं – संसार सम्बन्धी, धन सम्बन्धी, यौन सम्बन्धी– सब कुछ नहीं बदला हैं क्योंकि उसके जीवन परिवर्तन का स्तर अभी भी 10 साल की आयु वाला है। उसके जीवन के बहुत सारे महत्वपूर्ण क्षेत्र अभी भी उसके नियंत्रण में है; न कि यीशु के नियंत्रण में।

आरम्भ में वह एक उत्सुक विश्वासी होगा परन्तु अब वह ऐसा जीवन नहीं जी रहा। क्योंकि आज की तिथि में उसने अपने जीवन परिवर्तन में परिपक्वता को अपडेट नहीं किया है। जब 18 साल का एक युवक 24 साल का एक पुरूष बनता है उसके जीवन परिवर्तन को भी 24 साल जितनी परिपक्वता को पाना है। इसलिए वह जीवन के हर स्तर पर यीशु से अपना प्रभु, और उसके जीवन में जो कुछ घट रहा है उसका निदेशक बनने के लिए कह रहा है।

इसलिए आप अपनी प्रशिक्षण पुस्तिका में देखतें हैं कि एक जीवन परिवर्तित व्यक्ति जितना अधिक मसीह को जानता चला जाता है उतना अधिक उसे अपने आप को देता चला जाता है। हमें इस बात को लेकर उत्साहित रहना चाहिए कि जब हमनें उसका अनुसरण करना आरम्भ किया था तब से लेकर अब तक प्रभु हमारे जीवन में काम कर रहा है।

2. पश्चाताप को हमारे .....**अस्तित्व के केन्द्र**..... में पहुंचना चाहिए

यह हमारे कामों के द्वारा और अधिक गहरा जाना चाहिए – प्रेरितों 3:19

3. पश्चाताप को हमारे हृदय का .....**नियमित व्यवहार**.....बन जाना चाहिए।

एक कोमल और पश्चातापी हृदय ही कूंजी है

''टुटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है, हे परमेश्वर, तू टुटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता'' – भजन संहिता 51:17

. **आधूरा हृदय परिवर्तन कभी भी परमेश्वर का इरादा नहीं हैं**

उदाहरण : छः साल का लड़का

एक परिवर्तित विश्वासी लगतार अपना सब कुछ मसीह को देता चला जाता है जितना अधिक वह उसे जानता चला जाता है।

उदाहरण : पतरस – छः अवस्थांऐ

इस प्रकार बहुत से विश्वासीयो के लिए बदलाव की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती है।

''अधिकतर बदले गए''
''लगभग बदल गए''

यीशु खटखटाता रहेगा और हृदय परिवर्तन करता रहेगा जब तक कि हमारा पूरा जीवन उसकी प्रेमी प्रभुता के आधीन ना हो जाए और परमेश्वर के अभिप्रायो मे न बहे।

समापन :

हमारी जीवन शक्ति .....की गवाही.....हमारे परिवर्तन की प्रगति पर निर्भर है।

– ये हमारे अनुभव से सीधे सम्बन्धित है।

– ये ''यीशु के साथ'' कभी न अन्त वाला रोंमांच बन जाता है।

जीवन परिवर्तन रूकना नहीं चाहिए। यह नियमित चलना चाहिए। हमें किसी भी चीज़ को नहीं खोना जिसे प्रभु हमारे जीवन में करना चाहता है।

यदि हमारे पास समय होता तो हम पतरस के जीवन का अध्ययन कर सकते थे। 6 बार वह प्रभु के साथ चला, प्रभु ने उसे कायल किया, और हर बार वह पुराने रास्ते को छोड़कर नए रास्ते पर चला जिस पर प्रभु उसे चलाना चाहता था।

- हालांकि वह एक दृढ़ विश्वासी था। इस जल्दबाज व्यक्ति के पास एक कोमल और मुड़ने वाला दिल था। और उसने इन बदलावों को अपने जीवन में स्थान लेने की अनुमति दी और जीवन परिवर्तन की प्रक्रिया

उसके जीवन में बनी रही।

- और वह परमेश्वर की कलिसिया में एक प्रभावशाली शक्ति बन गया, क्योकि उसके पास पश्चातापी हृदय था, और उसने परमेश्वर को अनुमति दी कि वह उसे लगातार बदलता रहे।

हवाई जहाज के कारखाने का ट्रक के कारखाने में परिवर्तन।

विश्व युद्ध 2 के दौरान अमेरिका में बम्ब फेंकने वाले हवाई जहाज बनाने वाला एक बड़ा कारखाना था। जब युद्ध समाप्त हो गया तो हमने अखबारों में पढ़ा कि विलो रन कारखाना, ट्रक के कारखाना में परिवर्तित हो रहा है। इसलिए योजनांए बनाई गई। और भवन निर्माण करने वाले कारीगर आए और उन्होंने काम करना आरम्भ कर दिया ।

- अब यदि योजना बनते ही अखबार ने यह घोषणा की होती कि, ''विलो रन हवाई जहाज कारखाना ट्रक कारखाने में परिवर्तित हो गया है!'' तो क्या वे सही साबित होता ?

- नहीं, योजनाओं का खाका खीचां गया, फैसलें लिए गए, परन्तु उन्होंने काम आरम्भ नहीं किया था।

यह केवल 3–6 महीनों के बाद आरम्भ हुआ जब नक्शे बनाए गए और वे सभी तैयार थे बदलाव के लिए। पर क्या हम अभी भी कह सकते हैं कि विलो रन कारखाना अब ट्रक का कारखाना है क्योंकि योजनाओं का खाका खींच दिया गया है। निसंदेह नहीं कह सकते।

- अब यदि कारखाने का एक हिस्सा परिवर्तित कर दिया गया है, क्या हम कह सकते है कि विलोरन कारखाना अब ट्रक का कारखाना है?

- नहीं, क्योंकि कारखाने का केवल एक ही हिस्सा बदला गया है।

(अगले पृष्ठ पर जारी)

2. पश्चाताप को हमारे .....**अस्तित्व के केन्द्र**..... में पहुंचना चाहिए

यह हमारे कामों के द्वारा और अधिक गहरा जाना चाहिए – प्रेरितों 3:19

3. पश्चाताप को हमारे हृदय का .....**नियमित व्यवहार**.....बन जाना चाहिए।

एक कोमल और पश्चातापी हृदय ही कूंजी है

''टुटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है, हे परमेश्वर, तू टुटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता'' – भजन संहिता 51:17

. **आधूरा हृदय परिवर्तन कभी भी परमेश्वर का इरादा नहीं हैं**

उदाहरण : छः साल का लड़का

एक परिवर्तित विश्वासी लगतार अपना सब कुछ मसीह को देता चला जाता है जितना अधिक वह उसे जानता चला जाता है।

उदाहरण : पतरस – छः अवस्थांऐ

इस प्रकार बहुत से विश्वासीयो के लिए बदलाव की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती है।

''अधिकतर बदले गए''
''लगभग बदल गए''

यीशु खटखटाता रहेगा और हृदय परिवर्तन करता रहेगा जब तक कि हमारा पूरा जीवन उसकी प्रेमी प्रभुता के आधीन ना हो जाए और परमेश्वर के अभिप्रायो मे न बहे।

समापन :

हमारी जीवन शक्ति .....की गवाही.....हमारे परिवर्तन की प्रगति पर निर्भर है।

– ये हमारे अनुभव से सीधे सम्बन्धित है।

– ये ''यीशु के साथ'' कभी न अन्त वाला रोंमांच बन जाता है।

मान लीजिए पूरा कारखाना बदल दिया गया है और नए यन्त्रों को डाल दिया गया है।

- क्या हम कह सकते हैं कि यह अब परिवर्तित हो गया है?

- नहीं, अभी भी नही, क्योंकि कारखाना तब तक परिवर्तित नहीं हो सकता जब तक पुराने यन्त्रों को हटा न दिया जाए, और नए यन्त्रों को अन्दर न डाल दिया जाए और ट्रकों का उत्पादन होना शुरू न हो जाए और ट्रक बाहर न आने लग जांए।

- केवल तब हम कह सकते हैं कि यह परिवर्तित हो गया है। इससे पहले आप केवल यह कह सकते हैं कि योजनांए तो हैं पर यह परिवर्तित नहीं हुआ। आप यह कह सकते हैं कि एक हिस्सा परिवर्तित हो गया है। आप यह कह सकते हैं कि ''लगभग परिवर्तित'' हो गया है। पर जब तक निर्धारित की गई तिथि पर ट्रक बाहर न निकलने लग जांए तब तक आप नहीं कह सकते कि कारखाना अब तबदील हो गया है।

हममें से बहुतेरे जो आज यहां बैठे हैं वैधानिक रूप से कह सकते हैं :

- ''परमेश्वर की स्तुति हो! मेरा नया जन्म हो गया है और जीवन परिवर्तन की प्रक्रिया मुझमें आरम्भ हो गई है।''

- या, ''मैं जीवन परिवर्तन की प्रक्रिया को जितना तेजी से कार्य कर सकती है, को करने के लिए भरसक प्रयास कर रहा हूं।''

- या, ''मैं विश्वास करता हूं कि मैं अभी अधूरा परिवर्तित व्यक्ति हूं।''

- या, ''प्रभु के अनुग्रह से मैं कह सकता हूं कि मेरा लगभग जीवन परिवर्तित हो गया है।''

<u>पर हम असल में कभी नहीं कह सकते कि, ''मेरा जीवन अब परिवर्तित है''</u> जब तक परमेश्वर का पूर्ण उद्धार हममें पूरा नहीं हो जाता और हमारे जीवन के हर अंश को यीशु अपने अधिकार में नहीं ले लेता और हम उसके स्वरूप में नहीं बदल जाते, और जो कुछ परमेश्वर हमारे लिए चाहता हें वह नियमित हमारे जीवन में उत्पन्न नहीं होता चला जाता।

<u>इसलिए आप देखते हैं कि,</u> जीवन परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया है जो तब तक खत्म नहीं होती है जब तक परमेश्वर की योजना हमारे जीवन मे पूरी नही हो जाती और यीशु हमें अपने साथ हमेशा—2 के लिए नही ले लेता है। यीशु हमारे जीवन में नियमित काम करना चाहता है।

2. पश्चाताप को हमारे .....**अस्तित्व के केन्द्र**..... में पहुंचना चाहिए

यह हमारे कामों के द्वारा और अधिक गहरा जाना चाहिए – प्रेरितों 3:19

3. पश्चाताप को हमारे हृदय का .....**नियमित व्यवहार**.....बन जाना चाहिए।

एक कोमल और पश्चातापी हृदय ही कूंजी है

''टुटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है, हे परमेश्वर, तू टुटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता'' – भजन संहिता 51:17

. **आधूरा हृदय परिवर्तन कभी भी परमेश्वर का इरादा नहीं हैं**

उदाहरण : छः साल का लड़का

एक परिवर्तित विश्वासी लगतार अपना सब कुछ मसीह को देता चला जाता है जितना अधिक वह उसे जानता चला जाता है।

उदाहरण : पतरस – छः अवस्थांऐ

इस प्रकार बहुत से विश्वासीयो के लिए बदलाव की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती है।

''अधिकतर बदले गए''
''लगभग बदल गए''

यीशु खटखटाता रहेगा और हृदय परिवर्तन करता रहेगा जब तक कि हमारा पूरा जीवन उसकी प्रेमी प्रभुता के आधीन ना हो जाए और परमेश्वर के अभिप्रायो मे न बहे।

समापन :

हमारी जीवन शक्ति .....की गवाही.....हमारे परिवर्तन की प्रगति पर निर्भर है।

– ये हमारे अनुभव से सीधे सम्बन्धित है।

– ये ''यीशु के साथ'' कभी न अन्त वाला रोंमांच बन जाता है।

हमारी जीवन शक्ति की **गवाही** हमारे परिवर्तन की उन्नति पर निर्भर है।

- एक गवाह वह है जो यह गवाही देता है कि उनके साथ क्या घटा है।

- कुछ लोग एक ही गवाही बार–2 देते है; वे कहते रहते हैं कि, ''परमेश्वर की स्तुति हो, मेरा 20 साल पहले नया जन्म हुआ था!''

परन्तु आज की क्या बात, इस सप्ताह की क्या बात? अब की आपकी गवाही क्या है जो एक साल पहले आपके पास नहीं थी? हम ऐसी किसी बात की गवाही नहीं दे सकते जब तक जीवन परिवर्तन हममें जहां से चला था वहां से परिपक्व न होता चला जाए।

हमारी जीवन शक्ति की गवाही हमारे जीवन परिवर्तन के साथ सीधे समानुपात में होती है। यह केवल तभी सम्भव है जब हमने इसका अनुभव किया है और हम इसके बारे में बातचीत कर सकते हैं।

शायद हमने किसी को सांत्वना देने की कोशिश की होगी जिसने अपने किसी प्रिय जन को खो दिया हो। हम भले ही कितने भी सच्चे क्यों न हों हमारी सांत्वना तब तक प्रभावशाली नहीं होगी जब तक हम यह नहीं कहते, ''मैं जानता हूं कि आप कैसा महसुस करते हैं मैंने अपनी मां को 6 महीने पहले खोया था। ''हमनें इसका अनुभव किया है।

दुख की बात हैं कि कुछ लोग मसीह जैसा चाहता है उस तरह से पूर्ण परिवर्तन का अनुभव नहीं कर पाते हैं। मसीह चाहता है कि वे लोग इस बात की खोज करें कि वह उनके जीवन के कमरों में क्या कर सकता है, उनमें रोशनी ला सकता है, चंगा कर सकता है, उन्हें पूर्ण बना सकता है, उन्हें पूरा कर सकता है, उन्हें स्वस्थ दे सकता है। इसीलिए जीवन परिवर्तन एक ऐसी प्रक्रिया जो कभी नहीं रूकती।

यदि हम अपने जीवन परिवर्तन को अपनी वर्तमान की नौकरियों के साथ, अपने वर्तमान के सम्बन्धों के साथ, हम अपना पैसा कैसे खर्चते हैं के साथ.. और सब चीज़े जो मिलकर आज के जीवन को बनाती हैं, के साथ नया न करें तो हमारा जीवन परिवर्तन पूराना, रूका हुआ हैं और बहुत पहले ही कहीं पर रूक गया है। शायद हम आत्मिक उबाउपन या आत्मिक दयनीयता को महसुस कर रहें हैं।

जब हम पहली बार आरम्भ में यीशु के पास आए थे तब हमारी पश्चातापी आत्मा ने हमारे जीवन में जीवन परिवर्तन की प्रक्रिया को आरम्भ होने दिया। उसने यीशु को हममें एक नया व्यक्ति बनने दिया, उसने हमारी गवाही को जीवित रखा। हमारे पास प्रभु की भली बातें हैं जिनकी हम गवाही दे सकते हैं। हमें उन बातों पर नहीं बैठना चाहिए जो भूतकाल में हुई हैं। परन्तु उन बातों में हमें आनन्द करना है जो परमेश्वर प्रतिदिन हमारे जीवन में साल–दर–साल से कर रहा है। यह यीशु के साथ कभी भी न समाप्त होने वाला रोमांच बन जाता है।

2. पश्चाताप को हमारे .....**अस्तित्व के केन्द्र**..... में पहुंचना चाहिए

यह हमारे कामों के द्वारा और अधिक गहरा जाना चाहिए – प्रेरितों 3:19

3. पश्चाताप को हमारे हृदय का .....**नियमित व्यवहार**.....बन जाना चाहिए।

एक कोमल और पश्चातापी हृदय ही कूंजी है

''टुटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है, हे परमेश्वर, तू टुटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता'' – भजन संहिता 51:17

. **आधूरा हृदय परिवर्तन कभी भी परमेश्वर का इरादा नहीं हैं**

उदाहरण : छः साल का लड़का

एक परिवर्तित विश्वासी लगतार अपना सब कुछ मसीह को देता चला जाता है जितना अधिक वह उसे जानता चला जाता है।

उदाहरण : पतरस – छः अवस्थांऐ

इस प्रकार बहुत से विश्वासीयो के लिए बदलाव की प्रक्रिया कभी समाप्त नहीं होती है।

''अधिकतर बदले गए''
''लगभग बदल गए''

यीशु खटखटाता रहेगा और हृदय परिवर्तन करता रहेगा जब तक कि हमारा पूरा जीवन उसकी प्रेमी प्रभुता के आधीन ना हो जाए और परमेश्वर के अभिप्रायो मे न बहे।

समापन :

हमारी जीवन शक्ति .....की गवाही.....हमारे परिवर्तन की प्रगति पर निर्भर है।

– ये हमारे अनुभव से सीधे सम्बन्धित है।

– ये ''यीशु के साथ'' कभी न अन्त वाला रोंमांच बन जाता है।

प्रश्न पत्र, अधिवेशन **4**

1. लूका 15:11–24 की कहानी पढ़ें, किस प्रकार पद 21 पूरी कहानी की ''कूंजी'' हैं?

2. उनके लिए जो मसीह के राज्य में लगातार जी रहे हैं? पश्चाताप को असल में क्यों ''लगातार व्यवहार'' होना चाहिए,

3. नीचे दिए हुओं में से कौन सा बदलाव आप पर लागू होता है?

   – अभी प्रारम्भ हुआ
   – प्रगति कर रहा है
   – बहुत से बदल गए
   – लगभग बदल गए

4. सबसे ''करीबी बदलाव के अनुभव'' के अनुभव को ठीक कर बतांए जो आपके साथ हुआ।

5. यदि आप परमेश्वर को इस अनुभव में कुछ कहते सुने तो क्या सोचते हैं वह आपको क्या कहेगा।

6. यदि आपको अवसर मिले तो आप ''मसीह में सम्पूर्ण जीवन'' सेमिनार से सम्बन्धित अधिवेशनों में से क्या प्रश्न पूछेंगे?

व्यक्तिगत अनुभव पृष्ठ

1. यीशु मसीह कब आपके लिए महत्वपूर्ण हो जाता है, बजाए एक व्यक्ति के जिसके बारे में आपने सुना है?

2. एक नए जन्में विश्वासी का वर्णन लिखिए।

3. क्या आप यीशु को अपना उद्धारकर्ता करके और उस भरोसा कर और अपने जीवन के सिहांसन पर उसे निमंत्रित करके विश्वासी बन गए है? यदि हां, तो कब? (जितना नज़दीक आप बता सकते हैं)

4. जब आपका नया जन्म हुआ तब क्या हुआ ?

5. आप कैसे निश्चय जान सकते हैं कि आपके पास आत्मिक (अनन्त) जीवन है?

प्रश्म

— अधिवेश्न 3 के प्रश्न पत्र को जल्दी से पढ़ें।

— उनके भरे हुए उत्तरो को इक्ट्ठा करें। उन्हें अगले सप्ताह वापस कर दें।

प्रारम्भ करने का अच्छा तरीका : आपके समूह के हर एक सदस्य को घेरे में बैठाएं और उनके विचारों को बांटने में उनकी मदद करें।

— *''मसीह में सम्पूर्ण जीवन'' सेमिनार के अधिवेश्नों मे किस बात या किस अधिवेश्न ने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया है?*

तब आज रात की शिक्षा पर बात करें, आप निम्नलिखित को प्रयोग कर सकते हैं:

1. ''नया जन्म,'' ''जीवन परिवर्तन'' और ''उद्धार'' के शब्दों के बीच के अन्तर की तुलना के बारे में चर्चा करें।

2. आप इस वाक्य का किस प्रकार अनुवाद करेंगे, ''कार्यों की अपेक्षा पश्चाताप को अधिक गहराई में जाना चाहिए''?

3. जीवन परविर्तन के लिए पश्चाताप किस तरह ''कूंजी'' है?

4. आपने कब सबसे करीबी समय में पाया कि आपके जीवन परिवर्तन का अनुभव ''बिल्कुल ठीक हैं''? क्या आप बता सकते हैं कि इसमें क्या चीज़ें शामिल हैं?

अन्त में :

1. यदि यहां कोई ऐसा हे जिसने अपने ''व्यक्तिगत अनुभव पृष्ठ'' पूरी नहीं की है तो मुख्य अधिवेश्न में इसे पूरा करने का समय दिया जाए। इससे पहले कि वे वापस जांए इसे जमा कर लें। आप इन्हें देखें पर अगले अधिवेश्न से पहले इसे प्रशिक्षक को दे। वे समूह के सदस्यों को नहीं लौटाई जाएगी।

2. अधिवेश्न 4 के प्रश्न पत्र की तरफ उनका ध्यान खींचें । उन्हें प्रश्नों के उत्तर देने के लिए उन्हें उत्साहित करें।